Research Paper | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 10 |OCTOBER 2025

राजनीतिक अभियानों पर सोशल मीडिया की भूमिका का ऐतिहासिक अवलोकन

चैतन्य [1]

[1] **शोधार्थी राजनीति विज्ञान विभाग, मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर.**

ABSTRACT:

-

KEYWORDS:

-

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
1st October 2025	2nd October 2025

1. सोशल मीडिया का संक्षिप्त इतिहास

सोशल मीडिया ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म और तकनीकों को संदर्भित करता है जो उपयोगकर्ताओं को सामग्री बनाने और साझा करने और सोशल नेटवर्किंग और ऑनलाइन संचार में संलग्न होने में सक्षम बनाता है। सोशल मीडिया के विकास का पता इंटरनेट के शुरुआती दिनों में लगाया जा सकता है, बुलेटिन बोर्ड सिस्टम और शुरुआती ऑनलाइन समुदायों के आगमन के साथ। हालाँकि, 2000 के दशक की शुरुआत तक सोशल मीडिया ने व्यापक लोकप्रियता और प्रभाव हासिल करना शुरू नहीं किया था।[1] फ्रेंडस्टर, माइस्पेस और लिंक्डइन जैसे प्लेटफ़ॉर्म के लॉन्च ने सोशल मीडिया के एक नए युग की शुरुआत की। मूल रूप से, यह 2004 में फेसबुक का लॉन्च था जिसने वास्तव में इस क्षेत्र में क्रांति ला दी।[2], जिसने ट्विटर, इंस्टाग्राम और स्नैपचैट जैसे अन्य सोशल मीडिया दिग्गजों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया। सोशल मीडिया का समकालीन वैश्विक राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ा है, जिसने लोगों के राजनीतिक मुद्दों से जुड़ने के तरीके को आकार दिया है और चुनावों और अन्य राजनीतिक घटनाओं के परिणामों को प्रभावित किया है। सोशल मीडिया ने व्यक्तियों को एक-दूसरे से जुड़ने और साझा राजनीतिक लक्ष्यों के इर्द-गिर्द संगठित होने में सक्षम बनाया है, और हाशिए पर पड़ी आवाज़ों और वैकल्पिक दृष्टिकोणों के लिए एक मंच प्रदान किया है। हालाँकि, सोशल मीडिया की गलत सूचना और चरमपंथी विचारों (McIntyre, 2014) को फैलाने की क्षमता और राजनीतिक विमर्श के ध्रुवीकरण में योगदान देने के लिए भी आलोचना की गई है। समकालीन वैश्विक राजनीति पर सोशल मीडिया का प्रभाव आने वाले वर्षों में बहस और चर्चा का विषय बना रहेगा, क्योंकि तकनीक विकसित होती रहती है और लोगों के एक-दूसरे के साथ बातचीत करने और राजनीतिक मुद्दों से जुड़ने के तरीके को आकार देती है।

2. सोशल मीडिया की अवधारणा और प्रकार

मुख्य रूप से, सोशल मीडिया इंटरनेट-आधारित प्लेटफ़ॉर्म और तकनीकों को संदर्भित करता है जो उपयोगकर्ताओं के बीच सामाजिक संपर्क और नेटवर्किंग की सुविधा प्रदान करते हैं। ये प्लेटफ़ॉर्म व्यक्तियों और संगठनों को सामग्री बनाने और साझा करने, ऑनलाइन संचार में संलग्न होने और समान रुचियों या लक्ष्यों वाले अन्य लोगों से जुड़ने में सक्षम बनाते हैं। सोशल मीडिया का समकालीन वैश्विक राजनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, जिसने लोगों के राजनीतिक मुद्दों से जुड़ने के तरीके को आकार दिया है और चुनावों और अन्य राजनीतिक घटनाओं के परिणामों को प्रभावित किया है। सोशल मीडिया ने सूचना के प्रसार को सुगम बनाया है और लोगों को राजनीतिक मुद्दों के इर्द-गिर्द संगठित किया है, लेकिन गलत सूचना फैलाने और चरमपंथी विचारों को बढ़ाने की इसकी क्षमता के लिए इसकी आलोचना भी की गई है।[3] लगातार बढ़ती संख्या में, विभिन्न प्रकार के सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म हैं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी अनूठी विशेषताएँ और उद्देश्य हैं। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म के सबसे आम प्रकारों में फेसबुक और लिंक्डइन जैसी सोशल नेटवर्किंग साइट्स, ट्विटर जैसे माइक्रोब्लॉगिंग प्लेटफ़ॉर्म, यूट्यूब जैसे वीडियो-शेयरिंग प्लेटफ़ॉर्म, इंस्टाग्राम और स्नैपचैट जैसे फ़ोटो-शेयरिंग प्लेटफ़ॉर्म और रेडिट जैसे ऑनलाइन फ़ोरम शामिल हैं।[4] इन प्लेटफ़ॉर्म ने समकालीन वैश्विक राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, लोगों के संवाद करने और राजनीतिक मुद्दों से जुड़ने के तरीके को आकार दिया है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स और माइक्रो ब्लॉगिंग प्लेटफ़ॉर्म विशेष रूप से प्रभावशाली रहे हैं, जो व्यक्तियों को समान विचारधारा वाले लोगों से जुड़ने, साझा राजनीतिक लक्ष्यों के इर्द-गिर्द संगठित होने और कई मुद्दों पर जनता की राय को प्रभावित करने में सक्षम बनाते हैं

3 समकालीन वैश्विक राजनीति पर सोशल मीडिया का प्रभाव

3.1 सोशल मीडिया और राजनीतिक संचार

समकालीन वैश्विक राजनीति में राजनीतिक संचार में सोशल मीडिया ने क्रांति ला दी है, जो राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा करने और व्यक्तियों तथा संगठनों द्वारा जनमत को प्रभावित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है।[6] सोशल मीडिया के उपयोग ने मतदाताओं को राजनेताओं और राजनीतिक संगठनों से जुड़ने, उनके अभियानों के लिए समर्थन जुटाने और व्यक्तियों द्वारा राजनीतिक विचारों को व्यक्त करने और ऑनलाइन सक्रियता में शामिल होने का एक साधन प्रदान किया है। चुनावों और अन्य राजनीतिक घटनाओं के परिणामों को आकार देने में भी सोशल मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म द्वारा सूचना और विचारों के प्रसार को सुगम बनाया गया है, जिससे व्यक्ति समान राजनीतिक लक्ष्यों को साझा करने वाले अन्य लोगों से जुड़ सकते हैं। हालाँकि, सोशलमीडिया का उपयोग गलत सूचना फैलाने और चरमपंथी विचारों को बढ़ावा देने के लिए भी किया गया है, जिससे राजनीतिक विमर्श के ध्रुवीकरण में योगदान मिला है।[5] आने वाले वर्षों में राजनीतिक संचार पर सोशल मीडिया का प्रभाव बढ़ने की संभावना है, क्योंकि प्लेटफ़ॉर्म विकसित होते हैं और अधिक परिष्कृत होते हैं। ऐसे में, राजनीतिक संचार पर सोशल मीडिया के प्रभाव की आलोचनात्मक जांच करना और लोकतंत्र और राजनीतिक विमर्श पर इसके संभावित नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए रणनीति विकसित करना महत्वपूर्ण है।

3.2 सोशल मीडिया और राजनीतिक लामबंदी

समकालीन वैश्विक राजनीति में, राजनीतिक लामबंदी के लिए एक शक्तिशाली उपकरण सोशल मीडिया के माध्यम से उभरा है, जो व्यक्तियों और समूहों को राजनीतिक परिवर्तन की वकालत करने और खुद को संगठित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है ।[7] सूचना और विचारों के तेजी से प्रसार के माध्यम से, सोशल मीडिया ने समान राजनीतिक लक्ष्यों वाले लोगों को एक-दूसरे से जुड़ने में सक्षम बनाया है।[8] युवा लोग और हाशिए पर पड़े समुदाय, जिन्हें पारंपरिक रूप से मुख्यधारा के राजनीतिक विमर्श से बाहर रखा गया है, उन्हें विशेष रूप से सोशल मीडिया द्वारा संगठित किया गया है। अपने अनुभवों और दृष्टिकोणों को साझा करके, सोशल मीडिया ने उनकी आवाज़ को बढ़ाया है और उन्हें अपने कारणों के लिए समर्थन जुटाने में मदद की है। विरोध प्रदर्शन, मार्च और अन्य प्रकार की सक्रियता सोशल मीडिया के माध्यम से आयोजित की गई है, जिसने अरब स्प्रिंग और ब्लैक लाइव्स मैटर आंदोलन जैसे सामाजिक आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा, सोशल मीडिया का उपयोग राजनेताओं और अन्य सार्वजनिक हस्तियों को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराने के लिए किया गया है, जिससे सरकार में अधिक पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा मिला है। कुल मिलाकर, सोशल मीडिया ने लोगों के राजनीति से जुड़ने के तरीके को बदल दिया है, राजनीतिक लामबंदी और सक्रियता के लिए एक मंच प्रदान किया है जो आने वाले वर्षों में समकालीन वैश्विक राजनीति को आकार देना जारी रखेगा।

3.3 सोशल मीडिया और राजनीतिक प्रचार

समकालीन वैश्विक राजनीति में राजनीतिक प्रचार की भूमिका की व्यापक रूप से आलोचना की गई है, जिसमें सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को प्राथमिक चालकों में से एक के रूप में पहचाना गया है। इन प्लेटफॉर्म ने राजनीतिक अभिनेताओं को बहुत तेज़ी और दक्षता के साथ गलत सूचना और प्रचार फैलाने की अनुमति दी है, जो न्यूनतम विनियमन या निरीक्षण के साथ विशाल दर्शकों तक पहुँचते हैं। सोशल मीडिया पर राजनीतिक प्रचार विभिन्न रूपों में होता है ।[9], जिसमें फर्जी खबरें, हेरफेर की गई तस्वीरें और वीडियो और प्रतिक्रिया को भड़काने के लिए तैयार की गई भड़काऊ बयानबाजी शामिल है। राजनीतिक अभिनेताओं ने साजिश के सिद्धांतों को फैलाने, विरोधियों को बदनाम करने और अपने स्वयं के राजनीतिक एजेंडे को बढ़ावा देने के लिए भी सोशल मीडिया का इस्तेमाल किया है।[10] सोशल मीडिया पर राजनीतिक प्रचार के प्रसार ने पारंपरिक मीडिया स्रोतों में विश्वास को खत्म करने में योगदान दिया है, और लोगों के लिए तथ्य और कल्पना के बीच अंतर करना मुश्किल बना दिया है। इसका लोकतांत्रिक शासन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, क्योंकि व्यक्तियों और समूहों द्वारा अपनी राजनीतिक मान्यताओं और कार्यों को गलत या भ्रामक जानकारी पर आधारित करने की संभावना बढ़ रही है। सोशल मीडिया पर राजनीतिक प्रचार के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए, मीडिया साक्षरता और आलोचनात्मक सोच कौशल को बढ़ावा देने के लिए रणनीति विकसित करना और झूठी या भ्रामक जानकारी फैलाने के लिए राजनीतिक अभिनेताओं को जवाबदेह ठहराना आवश्यक है।[11] इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म को अपने प्लेटफ़ॉर्म पर सामग्री को विनियमित करने और राजनीतिक संचार के लिए अधिक जिम्मेदार और पारदर्शी दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए अधिक ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए।

3.4 सोशल मीडिया और राजनीतिक सेंसरशिप

समकालीन वैश्विक राजनीति में राजनीतिक चर्चा और बहस के लिए सोशल मीडिया एक महत्वपूर्ण मंच बन गया है। हालाँकि, सोशल मीडिया पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अक्सर राजनीतिक सेंसरशिप के अधीन होती है, जिसमें सरकारें और सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म कुछ प्रकार की सामग्री के प्रसार को नियंत्रित करने और सीमित करने के लिए विभिन्न उपायों का उपयोग करते हैं। सोशल मीडिया पर राजनीतिक सेंसरशिप कई रूप ले सकती है, जिसमें आपत्तिजनक या हानिकारक समझी जाने वाली सामग्री को हटाना, सामुदायिक दिशानिर्देशों का उल्लंघन करने वाले खातों को ब्लॉक करना और उपयोगकर्ताओं के न्यूज़फ़ीड में कुछ प्रकार की सामग्री को दबाने के लिए एल्गोरिदम का उपयोग करना शामिल है।[12] कुछ सरकारों ने अधिक चरम उपाय भी लागू किए हैं, जैसे कि राजनीतिक विरोध के दौरान सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म को बंद करना या व्यक्तियों को उनकी ऑनलाइन गतिविधियों के लिए हिरासत में लेना। जबकि सोशल मीडिया पर राजनीतिक सेंसरशिप को सार्वजनिक सुरक्षा को बढ़ावा देने और लोकतांत्रिक प्रक्रिया की अखंडता की रक्षा करने के एक आवश्यक साधन के रूप में देखा जा सकता है, यह मुक्त भाषण और लोकतांत्रिक शासन के लिए नकारात्मक प्रभाव भी डाल सकता है।[13] मुक्त भाषण को बढ़ावा देने और हानिकारक सामग्री को रोकने के बीच संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है, और यह सुनिश्चित करना है कि सोशल मीडिया पर सामग्री को नियंत्रित करने और सीमित करने के उपाय पारदर्शी, जवाबदेह और लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप हों।

3.5 राजनीति में सोशल मीडिया का परिचय

21वीं सदी तकनीक का युग है; यह तकनीक और वास्तविकता के बीच लगातार घटते अंतर में देखा जा सकता है क्योंकि हममें से लगभग सभी लोग कम से कम आधे रास्ते तक आभासी दुनिया में रह रहे हैं। तकनीक हमारे जीवन में व्याप्त हो गई है और हमारे दैनिक निर्णय लेने पर इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। सोशल मीडिया एक ऐसा उदाहरण है जिसमें तकनीक हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गई है। हालाँकि, इसी कारण से सोशल मीडिया तकनीक बार-बार रडार पर आ गई है ।[18] समाज, हमारे जीवन, राजनीति और लोगों पर सोशल मीडिया का लगातार बढ़ता प्रभाव निश्चित रूप से लोकतांत्रिक समाजों के लिए एक आशंका है और इसकी जाँच की आवश्यकता है। हाल ही में, फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब और कई अन्य प्लेटफार्मों से तत्कालीन संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के निलंबन ने सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर रूढ़िवादी पूर्वाग्रह के आरोपों को जन्म दिया है। इसने सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की राजनीतिक पहुँच और प्रभाव पर एक चर्चा भी शुरू कर दी है। भारत एक प्लेटफ़ॉर्म समाज है, जो वैन डिजिक के अनुसार "ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म और सामाजिक संरचनाओं के बीच अटूट संबंध पर जोर देता है। प्लेटफ़ॉर्म सामाजिक को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं: वे उन सामाजिक संरचनाओं का निर्माण करते हैं जिनमें हम रहते हैं।" (Polity & Platforms: Regulating the Political Influence of Social Media, n.d.) ऐसे समाजों में समाजों और विचारधाराओं के टकराव की प्रबल संभावना है।

राजनीति में सोशल मीडिया का उपयोग राजनीतिक प्रक्रियाओं और गतिविधियों में ऑनलाइन सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म के उपयोग को संदर्भित करता है। राजनीतिक प्रक्रियाओं और गतिविधियों में वे सभी गतिविधियाँ शामिल हैं जो किसी देश या क्षेत्र के शासन से संबंधित हैं।[19] इसमें राजनीतिक संगठन, वैश्विक राजनीति, राजनीतिक भ्रष्टाचार, राजनीतिक दल और राजनीतिक मूल्य शामिल हैं। मीडिया का प्राथमिक कर्तव्य हमें जानकारी देना और घटनाएँ होने पर हमें सचेत करना है। यह जानकारी हमारे विचारों और हमारे द्वारा की जाने वाली कार्रवाइयों को प्रभावित कर सकती है। मीडिया हस्तक्षेप की आवश्यकता का संकेत देकर या यह दिखाकर कि नागरिक बदलाव चाहते हैं, सरकार पर कार्रवाई करने का दबाव भी डाल सकता है।

इंटरनेट ने संचार के ऐसे चैनल बनाए हैं जो समाचार प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और सोशल मीडिया में न केवल संदेश बदलने की शक्ति है, बल्कि राजनीतिक भ्रष्टाचार, मूल्यों और राजनीति में संघर्ष की गतिशीलता को भी बदलने की शक्ति है।[20] चुनाव प्रक्रियाओं, वैश्विक संघर्ष और चरम राजनीति में सोशल मीडिया के उपयोग के माध्यम से, दुनिया भर में कूटनीति कम निजी और सार्वजनिक धारणा के प्रति अधिक संवेदनशील हो गई है। समय के साथ, सोशल मीडिया दुनिया में क्या चल रहा है, इसकी खबरों से हमें अवगत कराने का एक बड़ा तरीका बन गया है। ये नए स्टेशन कभी भी अपने राजनीतिक विचारों के बारे में पक्षपाती हो सकते हैं। इसमें ट्विटर और फेसबुक भी शामिल हैं, जो नागरिक जुड़ाव को बदलने की क्षमता रखते हैं, इसका एक बड़ा प्रभाव होता है और यह व्यक्तियों को एक विशेष तरीके से सोचने के लिए प्रभावित करता है।[21] सोशल मीडिया चुनावों और अभियानों को भी प्रभावित करता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि सोशल मीडिया की इंटरैक्टिव और सामुदायिक प्रकृति चुनावों और अभियानों के लिए विशेष रूप से शक्तिशाली हो सकती है। मतदाता अक्सर अपनी स्थिति पर चर्चा करने और अपना समर्थन साझा करने के लिए इन प्लेटफार्मों का उपयोग करते हैं। इसका एक उदाहरण है "मैंने मतदान किया" छवि दूसरों को अपने मतपत्र जमा करने या मतदान को प्रोत्साहित करने के लिए सहकर्मी दबाव बनाने की याद दिलाते हैं।

REFERENCES

1. एफ. गिलार्डी, टी. गेसलर, एम. कुबली, और एस. मुलर, "सोशल मीडिया एंड पॉलिटिकल एजेंडा सेटिंग, पोलिट. कॉमन, वॉल्यूम. 39, नंबर 1, पीपी. 39-60, 2022, डीओआई: 10.1080/10584609,202191039

2. एस.स्टियर, ए. ब्लेयर, एच. लिट्ज़, और एम. स्ट्रोलमेयर, "सोशल मीडिया पर चुनाव प्रचार: राजनेता, दर्शक, और फेसबुक और ट्विटर पर राजनीतिक संचार की मध्यस्थता," स्टडीइंग पॉलिटिज़ अक्रॉस मीडिया में, रूटलेज, 2020, पृ. 30-74

3. ओ. डी.अपुके, "राजनीतिक अभियान संचार में सोशल मीडिया और कम्प्यूटेशनल प्रचार का एमएलई, जे. लैंग कम्यून., खंड 5, संख्या 2, ग्रेड 225-251, 2018,

4. जे. कहान और बी. बोयर, "सोशल मीडिया गतिविधि और सोशल नेटवर्क का राजनीतिक महत्व, पोला कॉम्यून, खंड 35, संख्या 3, पृष्ठ 470-493, 2018, doi: 10.1080/10584609,20181426662

5. एम. पेत्रोवा, ए. सेन, और पी. यिल्दिरिम, "सोशल मीडिया और राजनीतिक योगदान: राजनीतिक प्रतिस्पर्धा पर नई तकनीक का प्रभाव," मैनेज. साइंस., खंड 67. अंक 5, पृ. 2997-3021, 2021

6. बी. ई. वीक्स। ए. आर्डेवोल-अब्रू, और एच. जेल डी ज़ुनिगा, "ऑनलाइन प्रभाव? सोशल मीडिया का उपयोग, राय नेतृत्व, और राजनीतिक प्रेरणा," इंट। जे. पोबाइल ओपिन. रेस, वॉल्यूम. 29, नहीं. 2, पीपी 214-219, 2017

7. एफ. ओमोटायो और बी. एम. फोलोरुन्सो, "युवाओं द्वारा राजनीतिक भागीदारी के लिए सोशल मीडिया का उपयोग," जेडीईएम-ईलोना ईडेमोक्रेसी ओपन गॉव, खंड 12, संख्या 1, पृष्ठ 132-157, 2020,

8. यू बोराह, "सोशल मीडिया और राजनीतिक अभियान: असम में मतदान व्यवहार में सोशल मीडिया की भूमिका का अध्ययन, आरईएस मिल, खंड 12, पृष्ठ 5, पृष्ठ 1271-1274, 2022

9. जे. चियाड़ीका और डी. एस. पॉलिटेक्निक "सोशल मीडिया और डिजिटल का उपयोग नं. नवंबर, 2023.

10. आर. के. "भारतीय राजनीतिक प्रचार प्रणाली में नए मीडिया का उपयोग, जे. पोलित, एससीएल पब्लिक ऑल, खंड 4, एम. 2, 2016, doi: 10.4172/2332-0761.1000204,

11. ए. बी. मेटकर और ए. आसले, "लुडिया में राजनीतिक प्रबंधन में सोशल मीडिया की भूमिका," एसएसआरएन इलेक्ट्रॉन. जे., 2020, doi: 10.2139/ssm,363784.3.

12. आर. नेहुलकर, "भारतीय राजनीति पर सोशल मीडिया का प्रभाव, 2018

13. आर. इदा, एम. साद, और एम. मसूद "इंडोनेशियाई और पाकिस्तानी युवाओं में राजनीतिक सक्रियता और जुड़ाव में सामाजिक मेलिया की दृढ़ता," लुट. जे. वेब बेस्ड कॉनैनैनिटीज़, खंड 16, संख्या 4, पृष्ठ 378-305, 2020,

14. जे. बूट , एच. सलीम, ए. सिद्दीकी, एस. सलीम, और एम. अवांग, "राष्ट्रीय राजनीतिक चुनावों में युवाओं की ई-भागीदारी पर सोशल मीडिया का प्रभाव। प्रबंधन, खंड 12. पृष्ठ 734-748, 2021।

15. एम. वाई. खान, ए. जावीद, एम. जे. खान, एस. यू. दीन, ए. खुर्शीद, और यू. नूर. पॉलीटिकल पार्टिसिपेशन थ्रू सोशल मीडिया कंपैरिजन का पाकिस्तान और मलेशिया यूथ, IEEE एक्सक्यूज, vol.,pp.35532-35543,2019

16. बी. एम. दर्शन और के. सुरेश, "राजनीतिक संचार में सामाजिक: भारत में सोशल मीडिया सक्षम राजनीतिक विमर्श, जुड़ाव और लामबंदी," ह्यूमन, सोस. साइंस. रेव, खंड 7, संख्या 4, पृष्ठ 195-202, 2019

17. ए. करामत और ए. फारूक, "राजनीतिक सक्रियता में सोशल मीडिया की उभरती भूमिका: धारणाएं और व्यवहार, साउथ एशियन स्टड, खंड 31, संख्या 1, μ. 381, 2016.

18. ए. एन. कोली फ्रिम्पोंग, पी. ली, जी. न्यामे, और एम. ए. होसिन, सोशल मीडिया राजनीतिक कार्यकर्ताओं का मतदान पैटर्न पर प्रभाव, खंड 44, संख्या 2. स्प्रिंगर यू.एस., 2022. doi: 10.1007/s11109-020-09632-1

19. वाई. थियोचारिस, एस. बौलियान, के. कोक-मिखलस्का, और बी. बम्बर। "प्लेटफ़ॉर्म अफोर्डेंस और राजनीतिक भागीदारी: सोशल मीडिया राजनीतिक जुड़ाव को कैसे नया रूप देता है," वेस्ट एक्स. पोलिट, खंड 46, संख्या 4, पृष्ठ 788-811, 2023, doi: 10.1080/01402382.2022.2087410

20. वी. के. ब्रैंडल, सी. गैलपिन, और एच. जे. ट्रेंज़, "ब्रेक्सिट 'विभाजन की राजनीति' के रूप में: जनमत संग्रह के बाद सोशल मीडिया अभियान," साउथ मोव स्टड, खंड 21, संख्या 1-2, पृष्ठ 234-251, 2022. doi: 10.1080/14742837.2021.1928484,

21. एन.ए. एघुनिके, "सोशल मीडिया, नाइजीरियाई युवा और राजनीतिक भागीदारी, अफ्र स्टड., खंड 10, संख्या 1, पृष्ठ 753-771, 2020, doi: 10-4818/978-1-7998-3019-1.ch040